शहीदी शताब्दी पुस्तक
प्रकाशना श्रृंखला-4

तेग बहादर सिमरिऐ

(श्री गुरु तेग बहादर जी का जीवन, शहादत
और संदेश : संक्षिप्त अध्ययन)

डॉ. संदीप सिंह

पब्लिकेशन एवं खोज विभाग,
हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी,
कुरुक्षेत्र

भेटा रहित

©
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

TEG BAHADAR SIMRIYE
(Hindi)

Writer:
Dr. Sandeep Singh
In-charge
Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

Research Associate:
Bhai Gurdas Singh

Typing Work:
Satnam Singh

First Edition November 2025
4,000

Printer: Tejas Printers, Patiala

Published by Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra

प्रवेशिका

श्री गुरु तेग बहादर जी का जीवन और उनकी बाणी, मानवता के लिए सदैवकालीन प्रेरना स्त्रोत का कार्य कर रहे हैं, जिनसे मनुष्य को आध्यात्मिक मार्ग और रूहानी जीवन के संबंध में मार्गदर्शन प्राप्त होता है। जहाँ गुरु पातशाह का जीवन सांसारिक मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा और धन-दौलत के पीछे भाग रहे मनुष्य को स्थिरता और शांति प्रदान करता है, वहीं उनकी बाणी विषय-विकारों में भटक रहे मानव को अकाल पुरख (परमात्मा) के नाम से जोड़ने का कार्य करती है।

श्री गुरु तेग बहादर जी और उनके साथ शहीद हुए महान गुरसिक्खों की 350 वर्षीय शहादत शताब्दी के अवसर पर सिक्ख संगत द्वरा गुरु पातशाह की संक्षिप्त जीवनी की आवश्यकता महसूस की जा रही थी हुई। हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी के पब्लिकेशन एवं खोज विभाग की तरफ से, गुरु साहिब की संक्षिप जीवनी और वाणी के संबंध में, डॉ. संदीप सिंह के द्वारा तैयार की गई पुस्तिका (ट्रैक्ट) प्रकाशित किया जाना एक सराहनीय कार्य है। गुरु पातशाह के चरणों में अरदास है कि वे समस्त प्राणी जगत को नाम-बाणी की बख्शिश प्रदान करें।

जथेदार जगदीश सिंह झींडा

प्रधान,

हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमैंट कमेटी,

कुरुक्षेत्र।

श्री गुरु तेग बहादर जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

- **प्रकाश (जन्म):** वैशाख मास, कृष्ण पक्ष 5, संवत् 1678 विक्रमी (1 अप्रैल 1621 ई.)
- **पिता जी :** श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब
- **माता जी :** माता नानकी जी
- **भाई-बहन:** बाबा गुरदित्ता जी, बीबी वीरो जी (बड़ी बहन), बाबा सूरज मल्ल जी, बाबा अणी राय जी और बाबा अटल राय जी
- **दादा जी :** श्री गुरु अर्जन देव जी
- **दादी जी :** माता गंगा जी
- **नाना जी :** भाई हरिचंद जी
- **नानी जी :** बीबी हरदेई जी
- **विवाह:** भाई लाल चंद और बीबी बिशन कौर की सपुत्री माता गुजरी जी से 15 अश्विन, संवत् 1689 विक्रमी (1632 ई.) को करतारपुर (जलंधर) में हुआ।
- **आठवें पातशाह द्वारा श्री गुरु तेग बहादर जी को गुरियाई की बख्शिश :** चेत्र मास, शुक्ल पक्ष 14, संवत् 1721 विक्रमी (30 मार्च, 1664 ई.) को दिल्ली में प्रदान की गई।
- **गुरियाई की रस्मी प्राप्ति :** भाद्रपद मास की अमावस्या (भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष 15), संवत् 1721 विक्रमी (11 अगस्त, 1664 ई.) को बाबा

बकाला नामक नगर में।* (*भट्ट वही तलाऊंडा*, परगना जींद के विवरण अनुसार)

- **चक्क माता नानकी (श्री आनंदपुर साहिब) नगर की स्थापना:** 21 आषाढ़, 1722 विक्रमी (19 जून, 1665 ई.)।
- **मालवा, दोआबा और बांगर (वर्तमान हरियाणा) क्षेत्रों में प्रचार यात्राएँ:** गुरियाई (अगस्त 1664) से नवंबर 1665 ई. तक।
- **पहली गिरफ्तारी:** कार्तिक मास, शूक्ल पक्ष 11, संबत् 1722 विक्रमी (8 नवंबर 1665 ई.) को धमतान साहिब (वर्तमान हरियाणा) में हुई। 2 महीने, 3 दिन की नजरबंदी के बाद पौष मास की एकम (जनवरी 1666 ई.) को रिहाई।
- **पूर्वी क्षेत्रों (उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, बांग्लादेश, असम आदि) में प्रचार यात्राएँ:** जनवरी 1666 से 1670 ई. तक (18 मई 1670 को पटना साहिब से आनंदपुर साहिब के लिए वापसी)।
- **श्री गुरु तेग बहादर जी के पुत्र और दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का प्रकाश (जन्म):** पौष मास, शुक्ल पक्ष 7, संबत् 1723 विक्रमी (22 दिसंबर 1666 ई.), पटना साहिब (बिहार) में।
- **मालवा और बांगर क्षेत्रों में प्रचार यात्राएँ:** अक्टूबर 1673 से 1674 ई. तक (लगभग एक वर्ष)।
- **कश्मीरी ब्राह्मणों के जथे (प्रतिनिधि मंडल) का अपने धर्म की रक्षा**

---

* भाई कान्ह सिंह नाभा के अनुसार गुरु साहिब चेत्र मास, शुक्ल पक्ष 14, संबत् 1722 विक्रमी (20 मार्च,1665 ई.) को गुरियाई पर विराजमान हुए।

हेतु गुरु जी के पास फरियादी हो कर आना: जेष्ठ सुदी 11, 1732 विक्रमी (25 मई 1675 ई.), पंडित कृपा राम दत्त की अगुवाई में

- **दूसरी गिरफ्तारी:** श्रावण परविष्टे 11, संवत् 1732 विक्रमी (11 जुलाई,1675 ई.) को मलिकपुर रंघड़ां से।
- **आगरा में तीसरी गिरफ्तारी:** नवंबर 1675 ई. में, हसन अली नामक एक गरीब चरवाहे द्वारा।
- **शहादत:** मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष 5, संवत् 1732 विक्रमी (11 नवम्बर,1675 ई.) दिन गुरुवार को, चांदनी चौंक, दिल्ली में।
- **शहादत के समय शासक:** मुगल बादशाह औरंगज़ेब।
- **शहीदी का फतवा जारी करने वाला काज़ी:** काज़ी अब्दुल वहाब वोहरा
- **शहीद करने वाला जल्लाद:** समाना निवासी जलाल-उद-दीन।
- **शहीदी स्थान:** गुरुद्वारा सीस गंज साहिब, चांदनी चौंक, दिल्ली।
- **गुरु साहिब के पवित्र धड़ का संस्कार करने वाले गुरसिक्ख:** भाई लखी

  शाह वंजारा, जिन्होंने भाई धूमा और अपने तीन पुत्रों—भाई हेमा, भाई नगाहीया और भाई हाड़ी—के साथ यह सेवा की।
- **पवित्र धड़ का संस्कार स्थान:** गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब, नई दिल्ली।
- **गुरु साहिब के पवित्र सीस (सिर) को दिल्ली से आनंदपुर साहिब ले कर जाने वाले गुरसिक्ख:** भाई जैता जी (बाबा जीवन सिंह), भाई नानू जी (नन्नूआ जी) और भाई ऊदा जी।

- **पवित्र सीस (सिर) का संस्कार स्थान:** गुरुद्वारा सीस गंज साहिब, श्री आनंदपुर साहिब।
- **गुरियाई का कुल समय:** 10 वर्ष, 7 महीने, 18 दिन।
- **कुल शारीरिक आयु:** 54 वर्ष, 7 महीने, 7 दिन।
- **श्री गुरु तेग बहादर जी की कुल बाणी:** 59 शब्द (15 रागों में) और 57 श्लोक, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं।

*****

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज श्री गुरु तेग बहादर जी की पवित्र बाणी का विवरण

राग	शब्द	अंग (पृष्ठ)
गउड़ी	9	219–220
आसा	1	411
देवगंधारी	3	536
बिहागड़ा	1	537
सौरठि	12	631–634
धनासरी	4	684–685
जैतसरी	3	703
टोडी	1	718
तिलंग	3	726–727
बिलावल	3	830–831
रामकली	3	902
मारू	3	1008
बसंत	5	1186–1187
सारंग	4	1231–1232
जैजावंती	4	1352–1353
'सलोक वारां ते वधीक' में 'सलोक महला ९' के शीर्षक अधीन राग मुक्त बाणी	57 श्लोक	1426-1429

कुल बाणी: 116 (59 शब्द और 57 श्लोक)

सिक्ख धर्म के नौवें पातशाह 'श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी' धार्मिक स्वतंत्रता और मानव अधिकारों की रक्षा के लिए दी गई अपनी अद्वितीय शहादत के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। उन्होंने अपने दर पर फरियादी हो कर आए कश्मीरी ब्राह्मणों की फरियाद अपना शीश देकर पूरी की। इस महान शहादत के लिए उन्हें हिन्दू धर्म में 'हिंद की चादर' कहकर सम्मान प्रदान किया जाता है परंतु गुरु साहिब जी की शहादत किसी विशेष क्षेत्र या धर्म तक सीमित नहीं है। 'गुर सोभा' नामक स्रोत ग्रंथ में कवि सेनापति ने गुरु साहिब जी को 'सृष्टि की चादर' कहकर उनकी शहादत को प्रणाम किया है जिन्होंने अपनी शहादत से समस्त सृष्टि की इज्जत और मर्यादा को कायम रखा।

श्री गुरु तेग बहादर जी का प्रकाश (जन्म) वैशाख मास, कृष्णा पक्ष 5, संवत् 1678 विक्रमी (1 अप्रैल, 1621 ई.) को सवा पहर रात शेष रहते, पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के घर माता नानकी जी की कोख से श्री अमृतसर साहिब में हुआ।[1] इतिहास में उल्लेख मिलता है कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने नवजन्मे बालक श्री गुरु तेग बहादर जी को शीश झुकाकर प्रणाम किया और फरमाया कि यह बालक दीन-दुखियों के संकट दूर करेगा और धर्म की रक्षा करेगा।[2] इनके जन्म-स्थान पर 'गुरुद्वारा गुरु के महल' सुशोभित है। पारिवारिक पृष्ठभूमि की दृष्टि से श्री गुरु तेग बहादर जी एक समृद्ध विरासत के मालिक थे। मीरी-पीरी के मालिक, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी आप जी के पिता और शहीदों के सिरताज श्री गुरु अर्जुन देव जी

[1] ज्ञान सिंह (ज्ञानी), *पंथ प्रकाश*, पृष्ठ 156, भाषा विभाग, पंजाब, 1987.

[2] *गुर बिलास पातशाही-६*, अध्याय 9, छंद 1037-38, पृष्ठ 455, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1997.

आप जी के दादा जी थे। चौथे पातशाह, श्री गुरु रामदास जी रिश्ते में इनके परदादा जी लगते थे और तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी, इनकी परदादी बीबी भानी के पिता जी थे।

अपने भाई-बहनों- बाबा गुरदित्ता जी, बीबी वीरो जी, बाबा सूरज मल्ल जी, बाबा अणी राय जी और बाबा अटल राय जी से गुरु साहिब जी उम्र में सबसे छोटे और छठे स्थान पर थे।

श्री गुरु तेग बहादर जी बचपन से ही आध्यात्मिक प्रवृत्तियों के मालिक थे। आवश्यकता अनुसार ही बोलते और अधिकतर समय शांत रहते। वे अपना समय सांसारिक बातों की बजाय गुरबाणी पढ़ने और कीर्तन सुनने में व्यतीत करते थे। एक बार माता नानकी जी ने चिंतित होकर छठे पातशाह के पास यह चिंता भी व्यक्त की कि शायद किसी शारीरिक तकलीफ़ के कारण बालक गुरु साहिब जी बहुत कम बोलते और कम खेलते हैं। इस पर गुरु साहिब जी ने फरमाया कि चिंता की कोई बात नहीं है, यह जन्म से ही उस अकाल पुरख (परमात्मा) के साथ एकरूप हैं।

गुरु साहिब जी की शिक्षा-दीक्षा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की देखरेख में हुई। गुरु साहिब जी ने बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, भाई जेठा जी, भाई बिधी चंद, भाई अब्दुल्ला और भाई बाबक जी जैसे गुणी-विद्वानों से गुरमति, शस्त्र-शास्त्र और संगीत आदि की विद्या प्राप्त की।

15 अश्विन, संवत् 1689 विक्रमी (1632 ई.) को श्री गुरु तेग बहादर जी का विवाह करतारपुर निवासी भाई लालचंद जी और बीबी बिशन कौर जी की सुपुत्री माता गुजरी जी से हुआ[3] जिनका पैतृक निवास 'लखनौर साहिब'

[3] *गुरुशब्द रत्नाकर महान कोश*, पृष्ठ 519, लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, 2024.

नामक नगर (वर्तमान जिला अंबाला, हरियाणा) में था।

सिक्ख परंपरा के अनुसार गुरु साहिब जी के बचपन का नाम 'त्याग मल्ल' था। 1634 ई. में करतारपुर की लड़ाई में लगभग 13 वर्ष के श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी तेग (एक कृपाण जैसा हथियार) के जौहर दिखाए और आक्रमणकारियों का बहादुरी से सामना किया। पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने उनके तेग चलाने की कला से प्रसन्न होकर उन्हें 'तेग बहादर' की उपाधि दी। इसके बाद गुरु जी 'तेग बहादर' नाम[4] से प्रसिद्ध हुए। सिक्ख स्रोत ग्रंथों में इस बात के भी संकेत[5] मिलते हैं कि छठे पातशाह ने गुरु साहिब जी का नाम जन्म से ही 'तेग बहादर' रखा था।

1644 ई. में जोती-जोति समाने से पहले श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने श्री गुरु हरिराय जी को गुरुगद्दी की बख्शिश दी और माता नानकी जी, श्री गुरु तेग बहादर जी तथा माता गुजरी जी को 'बाबा बकाला' नगर में रहने का आदेश[6] किया। उन्होंने माता नानकी जी को एक रूमाल, एक कटार और एक पोथी भेंट करके वचन[7] किया कि समय आने पर श्री गुरु तेग बहादर जी को गुरुगद्दी प्राप्त होगी।

---

[4] इस संबंधी विवरण के लिए देखें – प्रिं. सतिबीर सिंह रचित पुस्तकें – *साडा इतिहास* भाग पहला, पृष्ठ 326, न्यू बुक कंपनी, जलंधर, 2021 और *बडो कलू महि साका*, पृष्ठ 16, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी, 1975.

[5] *श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ*, जिल्द सातवीं, राशि 5, अंशू 63, पृष्ठ 2763, भाषा विभाग, पंजाब, 2011 और *गुर बिलास पातशाही-६*, अध्याय 9, बंद 1039, पृष्ठ 455, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1997.

[6] *गुर बिलास पातशाही-६*, अध्याय 21, बंद 587, पृष्ठ 857.

[7] ज्ञानी ज्ञान सिंह, *श्री गुर पंथ प्रकाश* (पूर्वार्ध), अध्याय 33 (डिजिटल प्रकाशन), भाई बलजिंदर सिंह (राड़ा साहिब), पृष्ठ 721.

'पंथ प्रकाश' स्रोत ग्रंथ के अनुसार[8] इस से अगले बीस वर्ष (1644-1664 ई.) श्री गुरु तेग बहादर जी ने 'बाबा बकाला' नगर में निवास किया। इस नगर में गुरु साहिब जी का निवास भाई मिहरू जी के घर में था जहाँ माता नानकी जी और माता गुजरी जी उनके साथ रहती थीं। इस दौरान उन्होंने अकाल पुरख की भक्ति करते हुए संयमपूर्ण, एकांत जीवन व्यतीत किया। बकाला नगर में निवास के दौरान गुरु साहिब जी अपने पास आने वाले जिज्ञासुओं की आध्यात्मिक शंकाओं का समाधान करके उन्हें गुरमति का मार्ग भी दृढ़ करवाते थे[9] और कई बार शस्त्र अभ्यास के लिए शिकार खेलने भी चले जाते थे।[10] भट्ट वहियों के अनुसार[11] बाबा बकाला के निवास दौरान उन्होंने सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए पूर्व की तरफ प्रचार यात्राएँ भी कीं।

गुरु साहिब जी के 'बाबा बकाला' निवास के दौरान, 1661 ई. में सातवें पातशाह के जोती-जोति समाने के बाद श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी आठवें गुरु बने। 1664 ई. में आठवें पातशाह ने दिल्ली में जोती-जोति समाने से पहले अगले गुरु संबंधी वचन किया- 'बाबा बसहि जि ग्राम बकाले। बनि

---

[8] ज्ञानी ज्ञान सिंह, *पंथ प्रकाश*, पृष्ठ 157, भाषा विभाग, पंजाब, 1987.

[9] प्रिं. सतिबीर सिंह, *इति जिनि करी*, पृष्ठ 31-32, न्यू बुक कंपनी, जलंधर, 1975.

[10] *महिमा प्रकाश*, भाग दूसरा, खंड दूसरा, पृष्ठ 625, भाषा विभाग, पंजाब, 2021.

[11] *भट्ट वही तलाऊंडा*, परगना जींद अनुसार गुरु साहिब जी आषाढ़ परविष्टे 11, संवत् 1713 विक्रमी (9 जून, 1656 ई.) को माता गुजरी जी, माता नानकी जी, सगे-संबंधियों व गुरसिक्खों के साथ पूरब यात्रा के लिए रवाना हुए। 'भट्ट वही पूरबी दक्षिणी, खाता बड़तियां का' अनुसार आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष 5, संवत् 1718 विक्रमी (1661 ई.) को गुरु साहिब जी बनारस पहुँचे और श्री गुरु हरिराय साहिब जी के जोती-जोति समाने के बाद परिवार से दुख सांझा करने के लिए पटना साहिब से प्रयागराज होते हुए माघ मास, कृष्णा पक्ष 5, संवत् 1719 विक्रमी (1662 ई.) को कीरतपुर साहिब लौटे।

गुर, संगति सकल समाले।'[12] अर्थात, अगले नौवें गुरु साहिब, जो संगत की संभाल करेंगे, 'बकाला' नगर में निवास करते हैं और रिश्ते में उनके बाबा (दादा) लगते हैं। इसमें गुरुगद्दी संबंधी स्पष्ट संकेत श्री गुरु तेग बहादर जी की ओर थे। 'भट्ट वही तलाऊंडा, परगना जींद, खाता जलाहनों' के अनुसार, आठवें पातशाह ने जोती-जोति समाने से पहले अपनी माता- माता सुलक्खनी जी के नेतृत्व में दीवान दरघा मल्ल, चौपत राय, जेठा, मनीराम, और नानू को जत्थे के रूप में गुरियाई की रस्में पूरी करने के लिए 'बाबा बकाला' नगर भेजा।

श्री गुरु तेग बहादर जी के गुरु रूप में प्रगट होने की घटना भाई मक्खन शाह लुबाणा से जुड़ी है, जो अपने समय का बड़ा व्यापारी था। बैलगाड़ियों और समुद्री जहाज़ों के ज़रिए उसका विशाल व्यापार होता था।

सूरत बंदरगाह के पास उसका माल-असबाब से भरा जहाज़ समुद्र में फँस गया। उसने गुरु चरणों में अरदास की और जहाज़ सुरक्षित किनारे लग गया। अपनी अरदास पूरी होने की कृतज्ञता के लिए जब वह 500 मुहरों का दसवंध भेंट करने दिल्ली पहुँचा, तब तक आठवें पातशाह जोती-जोति समा चुके थे। इसलिए जब वह दिल्ली से बकाला पहुँचा, तो सिक्ख परंपरा के अनुसार वहाँ 22 पाखंडी व्यक्ति गद्दियाँ लगाकर बैठे थे और स्वयं को गुरु कह रहे थे। भाई मक्खन शाह लुबाणा ने हर एक के आगे 2-2 मुहरें रखकर माथा टेका। अंत में जब वह श्री गुरु तेग बहादर जी के निवास पर पहुँचा और उनके सामने 2 मुहरें रखकर माथा टेका तो गुरु साहिब जी ने उसको समुद्र में जहाज़ फँसने, उस जहाज़ के लिए की गई अरदास और दसवंध की भेंट के

[12] *श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ*, जिल्द दसवीं, राशि 10, अंशू 52, पृष्ठ 3960.

बारे में बताया। सच्चा गुरु मिलने की खुशी में भाई मक्खन शाह लुबाणा छत पर चढ़ गया और गले का पल्ला हाथ से हिलाते हुए ऊँची आवाज़ में बोला- 'गुरु लाधो रे!' (अर्थात, सच्चा गुरु मिल गया है)। इस प्रकार श्री गुरु तेग बहादर जी ने भाई मक्खन शाह लुबाणा के माध्यम से अपने आप को सिक्ख धर्म के नौंवें गुरु के रूप में प्रगट किया।

संवत् 1721 विक्रमी के भाद्रपद (भादों) महीने की अमावस्या (11 अगस्त, 1664 ई.) को, श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी द्वारा गुरुगद्दी की रस्में पूरी करने के लिए भेजा गया जत्था बकाला नगर पहुँचा।[13] बाबा बुड्ढा जी के चौथे वंशज और बाबा झण्डा जी के सपुत्र भाई गुरदित्ता जी[14] ने संगत के सजे दीवान में श्री गुरु तेग बहादर जी की गुरियाई की रस्में निभाई। श्री गुरु तेग बहादर जी की पावन याद से जुड़ा होने के कारण यह बकाला नगर आज 'बाबा बकाला' के नाम से प्रसिद्ध है।

गुरियाई की रसम के बाद, ईर्ष्या के कारण धीर मल्ल ने गुरु साहिब जी को शारीरिक नुकसान पहुँचाने हेतु, शीहें मसंद द्वारा गुरु जी के ऊपर गोली चलवाई गई। यह गोली गुरु साहिब जी के माथे को हल्का-सा छूकर निकल गई और उन्हें कोई क्षति नहीं पहुँची। शांति और क्षमा के स्वरूप श्री गुरु तेग बहादर जी ने धीर मल्ल को बुरा या गलत बोलने के बजाय फरमाया- 'भले धीरमल्ल भले जी, भले धीरमल्ल धीर ।'[15] (अर्थात, धीर मल्ल! तेरा भला हो।)

गुरुगद्दी प्राप्ति के बाद गुरु साहिब जी ने पंजाब के माझा, दोआबा

---

[13] भट्ट वही तलाऊंडा, परगना जींद का विवरण ।

[14] ज्ञानी ज्ञान सिंह, *श्री गुर पंथ प्रकाश* (डिजिटल प्रकाशन), पृष्ठ 730.

[15] *श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ*, जिल्द दसवीं, राशि 11, अंशू 12, पृष्ठ 4022.

और मालवा क्षेत्र में प्रचार यात्राएँ[16] कीं। गुरु साहिब जी के महत्वपूर्ण कार्यों में उनकी प्रचार यात्रायों का एक विशेष स्थान हैं। उन्होंने पंजाब, बांगर (वर्तमान हरियाणा), उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, बांग्लादेश, असम आदि क्षेत्रों में जाकर श्री गुरु नानक देव जी द्वारा लगाए गए सिक्ख धर्म के पौधे को पुनः सींचा।

गुरु साहिब जी बकाला, सठियाला, रइया, कालेके, श्री अमृतसर साहिब, वल्ला, खडूर साहिब आदि नगरों से होते हुए, लक्खी जंगल पार करते हुए साबो की तलवंडी, कोट धर्मू, बछोआणा, गोबिंदपुरा, लैहरा-गागा, लैहल कलां, मकरोड़ साहिब आदि नगरों में प्रचार किया और वहाँ से बांगर (हरियाणा) के प्रसिद्ध स्थान धमतान साहिब पहुँचे। गुरु कीयां साखीयां[17] और महिमा प्रकाश स्रोत ग्रंथ[18] के अनुसार, गुरु साहिब जी ने इस स्थान को सिखी प्रचार का मुख्य केंद्र बनाया। संगत की प्रार्थना स्वीकार करते हुए यहाँ उन्होंने अपने निवास हेतु मकान बनवाए और कुआँ खुदवाया।

'गुरु कीयां साखीयां' के अनुसार[19] गुरु घर के श्रद्धालु बिलासपुर रियासत के राजा दीप चंद के निधन की सूचना मिलने पर, गुरु साहिब जी उसकी सत्रहवीं पर रानी चंपा देवी को ढाढ़स बंधाने के लिए कीरतपुर साहिब से बिलासपुर पहुँचे। रानी चंपा देवी ने गुरु साहिब जी को बिलासपुर रियासत में नगर बसाने के लिए भूमि दान करने की इच्छा व्यक्त की तो गुरु साहिब जी

---

[16] यात्रा विवरण का आधार प्रिं. सतिबीर सिंह रचित *इति जिनि करी* और ज्ञानी ज्ञान सिंह रचित *तवारीख़ गुरु खालसा* को बनाया गया है।

[17] *गुरु कीयां साखीयां*, पृष्ठ 70, सिंह ब्रदर्स, अमृतसर, 2008.

[18] *महिमा प्रकाश*, भाग दूसरा, खंड दूसरा, पृष्ठ 638.

[19] *गुरु कीयां साखीयां*, पृष्ठ 71-72.

ने बिना मूल्य की भूमि स्वीकार करने के बजाय 500 रुपये देकर माखोवाल, सहोटा और लोधीपुर- तीन गाँवों की भूमि, नया नगर आबाद करने के लिए खरीदी। 21 आषाढ़, संवत् 1722 विक्रमी (19 जून, 1665 ई.) को गुरु साहिब जी ने इन तीन गाँव की संयुक्त (सांझी) भूमि 'माखोवाल के थेह (खंडहर)' पर, बाबा बुड्ढा जी के चौथे वंशज और बाबा झण्डा जी के सपुत्र भाई गुरदित्ता जी से नए नगर की आधारशिला रखवाई।[20] इस नगर का नाम माता नानकी जी के नाम पर 'चक्क माता नानकी' रखा गया, जो बाद में 'श्री आनंदपुर साहिब' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

नए नगर के निर्माण की देखरेख का कार्य भाई भागू जी, भाई रामा जी, भाई साधू मुलतानी जी और भाई देश राज जी आदि गुरसिक्खों को सौंपकर, गुरु साहिब जी संवत् 1722 विक्रमी के अश्विन मास (3 अक्तूबर, 1665 ई.) में माता गुजरी जी, माता नानकी जी और सिक्खों के साथ आनंदपुर साहिब से पूर्व की तरफ सिक्खी प्रचार के लिए रवाना हुए।[21] इस दौरान गुरु जी कीरतपुर साहिब, घनौली, रोपड़, दुग्गरी, कोटली, घड़ूआं, नंदपुर-कलौड़, बहेड़, मकारपुर, नौलक्खा, आकड़, सैफाबाद (वर्तमान बहादरगढ़), लहिल गाँव (वर्तमान गुरुद्वारा दुख निवारण साहिब, पटियाला), समाना, मूलोवाल, सेखा, फरवाही, हंडियाया, भीखी , गंढुयां, ख्याला कलां, मौड़ मंडी आदि स्थानों से होते हुए दूसरी बार धमतान साहिब पहुँचे। 'भट्ट

[20] गुरु तेग बहादुर जी महल नावां, साल सतरां सौ बाईस असाढ़ परविष्टे इक्कीस सोमवार को, माखोवाल के थेह ते गाम बसाया। नाम चक्क नानकी राखा।
- भट्ट वही मुलतानी सिंधी, खाता बलाऊतों का।

[21] प्रिं. सतिबीर सिंह, *इति जिनि करी*, पृष्ठ 77-78.

वही जादोवंशियां की, खाता बड़तीयों का' के अनुसार[22] श्री गुरु तेग बहादर जी को मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब के आदेश पर आलम खाँ रुहेला द्वारा कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष 11 (8 नवंबर, 1665 ई.) को धमतान साहिब से गिरफ्तार किया गया। राजा जय सिंह के पुत्र राजा राम सिंह के प्रयासों से[23] गुरु साहिब जी को लगभग 2 महीने, 3 दिन की नजरबंदी के बाद रिहा कर दिया गया। यह गुरु साहिब जी की पहली गिरफ्तारी थी, जो उनकी शहादत से लगभग दस वर्ष पूर्व हुई। इस गिरफ्तारी से यह स्पष्ट था कि औरंगज़ेब सिक्ख धर्म और श्री गुरु तेग बहादर जी के प्रचार को अपनी हुकूमत के लिए बड़ा खतरा मानता था।

रिहाई के बाद गुरु जी मथुरा, आगरा, कानपुर, कड़ा-मानकपुर, इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज), मिर्ज़ापुर, बनारस, सासाराम, गया आदि स्थानों में प्रचार करते हुए पटना साहिब पहुँचे। अपने परिवार और मुख्य सिक्खों को पटना साहिब में ठहराकर, गुरु जी बंगाल-असम की प्रचार यात्रा पर निकल गए। साहिबगंज, भागलपुर, कंत नगर*, राजगृह, मालदा आदि

---

[22] गुरु तेग बहादुर जी महल नावें को नगर धमतान परगना बांगर से आलम खान रुहेला शाही हुकम गैल दिल्ली को ले कर आया। साल सतरां सौ बाईस कातक सुदी ग्यारस को। साथ सती दास, मती दास बेटे हीरा मल्ल के, गुआल दास बेटा छटे मल्ल छिब्बर के, गुरदास बेटा कीरत बड़तिए का, संगत बेटा बिनै का उपल, जेठा, दयाल दास बेटे माय दास के, होर सिक्खफकीर साथ आए।...दो मास तीन दिन गुरु जी बंद रहे। संमत सतरां सौ बाईस कृष्ण पक्ष पोस माख की एकम को मुक्त हुए।

- भट्ट वही जादोबंसियों की, खाता कनावत बड़तियों का।

[23] प्रिं. तेजा सिंह और डॉ. गंडा सिंह, *सिक्ख इतिहास (1469-1765)*, पृष्ठ 51-52, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2006.

* यह स्थान बिहार राज्य के कटिहार जिले में स्थित है। इस इलाके के लगभग 10 गाँव सिक्ख आबादी वाले गाँव हैं जिन्होंने इस क्षेत्र में श्री गुरु तेग बहादुर जी के आगमन (1666 ई.) के समय से ही सिक्खी स्वरूप और सिक्खी विरासत को सँभाल कर रखा हुआ है। इन गाँवों के अधिकांश

स्थानों से होते हुए वे वर्तमान बांग्लादेश के ढाका नामक स्थान पर पहुँचे। यहीं पर श्री गुरु तेग बहादर जी को यह शुभ समाचार मिला कि पौष मास, शुक्ल पक्ष 7, संवत् 1723 विक्रमी (22 दिसंबर, 1666 ई.) को पटना साहिब में उनके घर एक सुंदर और तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ है[24] जिसका नाम गुरु जी ने 'गोबिंद दास'* रखा। आगे चलकर इन्होने सिक्ख धर्म के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के रूप में सिक्ख धर्म का नेतृत्व किया।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने ढाका से आगे असम तक के क्षेत्रों में सिक्ख धर्म का प्रचार किया। असम के धुबरी नामक स्थान पर उन्होंने राजा राम सिंह और अहोम कबीले के राजा चक्रध्वज प्रणपाल सिंह के बीच युद्ध को टालकर शांति समझौता करवाया। इस स्थान पर 'गुरुद्वारा दमदमा साहिब' मौजूद है।

असम से लौटते समय पटना साहिब में गुरु जी अपने लगभग चार वर्ष के पुत्र बाल (गुरु) गोबिंद दास जी से पहली बार मिले। कुछ समय पटना साहिब में रुककर, 18 मई 1670 ई. को गुरु साहिब जी पंजाब की ओर

सिक्ख खेती-बाड़ी का कार्य करते हैं और अपनी पहचान को गुरु साहिब जी से जोड़ते हुए, सरकारी कागज़ों में अपनी जाति 'सोढवंशी खालसा' लिखवाते हैं। वर्तमान समय में 'लक्ष्मीपुर' गाँव में एक सुंदर ऐतिहासिक गुरुद्वारा गुरु साहिब जी की याद में सुशोभित है, जिसे सिक्ख संगत द्वारा लगभग एक सदी पहले 'कंत नगर' नामक स्थान में बाढ़ आने के कारण वहाँ से गुरुद्वारा साहिब की मिट्टी 'लक्ष्मीपुर' में लाकर स्थापित किया गया था। हिंदुस्तान टाइम्स (2 जनवरी, 2019) के अनुसार इस इलाके में सिक्खों की आबादी लगभग 18,000 है, जिस कारण इसे 'बिहार का मिनी पंजाब' भी कहा जाता है।

[24] प्रिं. सतिबीर सिंह, *इति जिनि करी*, पृष्ठ 119.

* यह नाम श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा पटना साहिब साहिब की संगत को भेजे गए हुक्मनामों में दर्ज विवरण के अनुसार है। सिक्ख परंपरा में प्रचलित नाम (गुरु) गोबिंद राय जी है।

रवाना हुए।[25] उस समय उनका परिवार पटना साहिब में ही रहा, जिसे गुरु जी ने आनंदपुर साहिब पहुँचकर, 1672 ई. के अंत में पंजाब बुलाया। पटना साहिब से अयोध्या, लखनऊ, शाहजहानपुर, बरेली, पीलीभीत, नानकमत्ता, मुरादाबाद, हरिद्वार, बूड़ीया, जगाधरी, सुढ़ैल-सुढ़ैल, बनी बदरपुर, लखनौर, कीरतपुर साहिब आदि स्थानों से होते हुए श्री गुरु तेग बहादर जी अक्टूबर 1670 ई. में आनंदपुर साहिब पहुँचे।

श्री गुरु तेग बहादर जी के पूर्व की तरफ से आनंदपुर साहिब लौटने तक यह नगर सिक्ख धर्म के प्रचार का एक बड़ा केंद्र बन चुका था, जहाँ दूर-दूर से संगत आकर गुरु साहिब जी के दर्शन करके सिक्खी की दात प्राप्त करती थी। आनंदपुर साहिब में ही गुरु जी ने अध्यात्म की खोज में लगे भाई कन्हैया को उपदेश देकर सिक्ख मार्ग का अनुयायी बनाया और सेवा-भावना वाली सम-दृष्टि का आशीर्वाद दिया। 29 मार्च, 1672 ई. को भाई मनी सिंह स्थायी रूप से सेवा के लिए श्री गुरु तेग बहादर जी के पास आनंदपुर साहिब आ गए।[26] इससे पहले, 1657 ई. में 13 वर्ष की आयु में वे कीरतपुर साहिब में श्री गुरु हरिराय जी के और 1664 ई. में 20 वर्ष की आयु में बाबा बकाला में श्री गुरु तेग बहादर जी के दर्शन करके सिक्ख धर्म की दीक्षा प्राप्त कर चुके थे।

1672 ई. के अंत में गुरु साहिब जी का परिवार भी पटना साहिब से आनंदपुर साहिब के लिए रवाना हुआ और मार्च 1673 ई. में गुरु जी के पास आनंदपुर साहिब पहुँच गया। उस समय (गुरु) गोबिंद दास जी की आयु लगभग आठ वर्ष की थी। अपनी रचना “बचित्तर नाटक” में श्री गुरु गोबिंद

[25] सतिबीर सिंह, *इति जिनि करी*, पृष्ठ 126.

[26] सतिबीर सिंह, *इति जिनि करी*, पृष्ठ 126.

सिंह जी ने आनंदपुर साहिब पहुँचने के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा उन्हें दी गई विभिन्न प्रकार की शिक्षा, सुगम वातावरण और सांसारिक सुख-सुविधाएँ प्रदान करने का उल्लेख[27] किया है।

आनंदपुर साहिब निवास के दौरान, अक्टूबर 1673 ई. में श्री गुरु तेग बहादर जी ने मालवा और बांगर (वर्तमान हरियाणा) की प्रचार यात्राएँ शुरू कीं। लगभग एक वर्ष तक गुरु जी ने मालवा और बांगर के अनेक गाँवों में अपने पावन चरण डाले और लोगों को सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। गुरु जी की प्रचार यात्राओं के संबंध में यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि ये यात्राएँ केवल प्रचार तक सीमित नहीं थीं। इन यात्राओं के दौरान गुरु साहिब जी ने जहाँ मानवता को आध्यात्मिकता से जोड़कर सत्य मार्ग पर चलने की शिक्षा दी, वहीं अनेक सामाजिक कार्य भी किए। विभिन्न नगरों में पीने के पानी की समस्या दूर करने हेतु कुएँ खुदवाए। लोगों को बीमारियों से बचाने के लिए तंबाकू जैसी हानिकारक वस्तु का त्याग करवाया। कम उपज वाली भूमि वाले गाँवों को उनकी मिट्टी-पानी के अनुसार उपयुक्त फसलों की जानकारी देकर अपनी बख्शिश द्वारा उपज में बढोतरी की। लोगों को चोरी, बेईमानी और बुरे कार्यों से हटाया तथा उनमें अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध खड़ा होने की हिम्मत पैदा दी। इस प्रकार श्री गुरु तेग बहादर जी धार्मिक दृष्टि से जनता को भीतर से भी मज़बूत कर रहे थे और सामाजिक-आर्थिक रूप में भी ऐतिहासिक सुधार कर रहे थे। अपने उपदेशों और कार्यों के माध्यम से वे एक लोकप्रिय जन-नायक के रूप में उभरकर सामने आए।

---

[27] मद्र देस हम को ले आए ॥ भांति भांति दाईअन दुलराए ॥२॥
कीनी अनिक भांति तन रच्छा ॥ दीनी भांति भांति की सिच्छा ॥
-शब्दार्थ श्री दसम ग्रंथ साहिब, पोथी पहिली, अंग 59

इसी समय, जहाँ श्री गुरु तेग बहादर जी अपने उपदेशों और जन-कल्याणकारी कार्यों से मानवता के मसीहा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे, वहीं मुग़ल हुकूमत की जन-विरोधी और अत्याचारी नीतियों के कारण देश में हाहाकार मचा हुआ था। आज के अनेकों तथाकथित इतिहासकारों और स्वयंभू विद्वानों का उस समय के मुग़ल शासक औरंगज़ेब को न्यायप्रिय और योग्य शासक सिद्ध करने पर जोर लगा हुआ है परंतु इतिहास में अनेक प्रमाण हैं जो औरंगज़ेब को गैर-इस्लाम विरोधी और निर्दयी-अत्याचारी शासक साबित करते हैं।

औरंगज़ेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था, जो दार-उल-इस्लाम की नीति के अंतर्गत पूरे देश को मुसलमान बनाना चाहता था। अपने इस सपने को पूरा करने के लिए उसने गैर-मुसलमानों पर अनेक कठोर आदेश[28] लागू किए ताकि वे इस्लाम स्वीकार कर लें। मआसिरि-ए-आलमगीरी के अनुसार[29] औरंगज़ेब ने सूबों के नाज़िमों को आदेश दिया कि वे काफिरों के स्कूल और मंदिरों को नष्ट कर दें तथा उनकी शैक्षणिक और धार्मिक गतिविधियाँ बंद कर दें। इस आदेश के अंतर्गत गुजरात का सोमनाथ मंदिर, बनारस का काशी विश्वनाथ मंदिर और मथुरा का केशव राय मंदिर नष्ट कर दिए गए।[30] मंदिरों से उखाड़कर लाई गई मूर्तियाँ आगरा की मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे दबा दी गईं, ताकि मस्जिद में आने-जाने वाले मुसलमान उन धार्मिक मूर्तियों को

---

[28] विस्तृत विवरण के लिए देखें- प्रिं. सतिबीर सिंह, *इति जिनि करी*, पृष्ठ 147-151.

[29] *MAÂSIR-I-ÂLAMGIRI,* Sir Jadunath Sarkar (Pranslater), Royal Asiatic Society of Bengal, 1947 AD, P.51-52.

[30] Ishwari Prasad, *A Short History of Muslim Rule in India,* The Indian Press Limited, Allahabad, 1931 AD, P. 687

रौंदकर उनकी बेअदबी कर सकें।[31] हिंदू धर्म की पवित्र नगरी मथुरा का नाम बदलकर इस्लामाबाद रख दिया गया।[32] अकबर द्वारा 1564 ई. में बंद किया गया जज़िया कर, औरंगज़ेब ने 1679 ई. में फिर से लागू कर दिया।[33] अपनी कट्टर नीतियों के अंतर्गत औरंगज़ेब ने इफ़्तिखार ख़ान[34] को कश्मीर का गवर्नर नियुक्त किया, जिसने कश्मीरी पंडितों को इस्लाम धर्म में लाने या कत्ल करने का आदेश जारी दिया। ऐसे दमनकारी माहौल और गैर-इस्लाम विरोधी नीतियों के कारण हिंदुओं में रोष और भय का वातावरण था, लेकिन वे अधिक कुछ कर पाने में असमर्थ और लाचार थे।

इन्हीं प्रचार यात्राओं के कुछ महीनों बाद इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना घटी, जिसने इतिहास के पन्नों में एक अनूठा अध्याय शामिल किया। इतिहास का यह पन्ना श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के अध्याय की शुरुआत भी माना जा सकता है।

भट्ट वही मुल्तानी सिंधी के अनुसार[35], ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष 11,

---

[31] Stanley Lane-Poole*, Rulers of India: Aurangzib*, Printed at the Clarendon Press, Oxford University, 1893 AD, P. 136

[32] Ishwari Parshad, *A Short History of Muslim Rule in India,* P.687.

[33] Wikipedia.org/wiki/jizya

[34] भाई संतोख सिंह ने इसका नाम शेर अफ़गान ख़ाँ लिखा है (राशि 12, अंशू 27), जो इतिहासकारों के अनुसार औरंगज़ेब द्वारा दी गई उपाधि का नाम है।

[35] कृपा राम बेटा अड़ू राम का पोता नरैण दास का पड़पोता ब्रह्म दास का बंस ठाकुर दास की दत्त गोत्रा मुझाल ब्राह्मण बासी मट्टन देश कश्मीर संबत सतरां सौ बत्तीस जेठ मासे सुदी एकादसी के दिहु खोड़स मुखी कश्मीरी ब्राह्मणों को गैल लै ग्राम चक्क नानकी परगना कहिलूर गुरु तेग बहादुर जी महल नामा के दरबार आइ फरियादी हुआ। गुरु जी ने इसे धीरज दई, बचन हुआ तुसां दी रक्षा बाबा नानक जी करेगा।

- भट्ट वही मुलतानी सिंधी, खाता बलउतों का।

संवत् 1732 विक्रमी (25 मई, 1675 ई.) को 16 कश्मीरी ब्राह्मणों का एक प्रतिनिधिमंडल, मटन निवासी पंडित कृपा राम दत्त[36] की अगुवाई में अपनी फरियाद लेकर श्री गुरु तेग बहादर जी के पास चक्क माता नानकी (श्री आनंदपुर साहिब) पहुँचा। ये दुखी कश्मीरी ब्राह्मण हिंदू धर्म की रक्षा की गुहार लेकर गुरु साहिब जी के पास आए थे, क्योंकि औरंगज़ेब ने उन्हें आदेश दिया था कि वे या तो इस्लाम स्वीकार करें या मौत चुनें । गुरु जी ने इन ब्राह्मणों को धैर्य देते हुए कहा कि वे औरंगज़ेब तक यह संदेश पहुँचा दें कि श्री गुरु तेग बहादर उनके नेता हैं। जो निर्णय गुरु साहिब जी का होगा, वही सभी ब्राह्मणों का निर्णय होगा। इसलिए ब्राह्मणों को व्यर्थ परेशान न किया जाए। इस प्रकार श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने दर पर आए मज़लूमों के धर्म और विश्वास की रक्षा के लिए औरंगज़ेब की मुग़ल हुकूमत को सीधी-स्पष्ट चुनौती देते हुए अद्वितीय साहस और निर्भीकता की मिसाल कायम की।

श्री गुरु तेग बहादर जी का यह ऐलान “बाबे के” और “बाबर के” के बीच स्पष्ट टकराव का संकेत था। यह टकराव “जन-विरोधी ज़ालिम राज” और “हलीमी राज” का टकराव था, जिसकी शुरुआत श्री गुरु नानक देव जी के समय से ही हो चुकी थी। श्री गुरु तेग बहादर जी न तो तिलक-जनेऊ धारण करते थे और न ही इनमें विश्वास रखते थे, परंतु फिर भी धार्मिक अन्याय के विरोध और धर्म की स्वतंत्रता के लिए वे कश्मीरी ब्राह्मणों के तिलक-जनेऊ बचाने हेतु मुग़ल हुकूमत के सामने डट गए। असल मुद्दा

[36] कृपा राम बाद में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का अध्यापक भी रहा और प्रमुख सिक्खों में शामिल होकर महत्त्वपूर्ण योगदान देता रहा। यही कृपा राम अमृत छक कर (अमृतपान करके) कृपा सिंह बना और चमकौर के युद्ध में शहीदी प्राप्त की। (गुरु तेग बहादुर: जीवन, संदेश ते शहादत, तारन सिंह (संपा.), पृष्ठ 201, प्यारा सिंह पदम के लेख से)

तिलक-जनेऊ का नहीं, बल्कि धार्मिक ज़बरदस्ती का विरोध करना था। इसलिए पहली जोति में श्री गुरु नानक देव जी ने ज़बरन जनेऊ पहनने नहीं दिया और नौंवीं जोति में श्री गुरु तेग बहादर जी ने ज़बरन जनेऊ उतारने नहीं दिया और उसकी रक्षा के लिए वे श्री आनंदपुर साहिब से दिल्ली की ओर चल पड़े।

दिल्ली जाते समय यह स्पष्ट था कि गुरु साहिब जी धर्म के लिए कलियुग की एक बड़ी और अनूठी घटना को साकार रूप देने जा रहे हैं। दिल्ली जाने से पहले, श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 8, संवत् 1732 विक्रमी (8 जुलाई, 1675 ई.) को श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने सुपुत्र (गुरु) गोबिंद दास जी (श्री गुरु गोबिंद सिंह जी) को गुरुगद्दी की बख्शिश की।[37] गुरु साहिब जी ने संगत को श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की आज्ञा में रहने का आदेश दिया और परिवार को मोह से विरक्त करने के लिए उपदेश दिया कि संसार में शरीरों का संबंध ऐसा ही है, जैसे नदी के प्रवाह से तिनके का और वृक्ष से पक्षी का।

श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 11, संवत् 1732 विक्रमी (11 जुलाई, 1675 ई.) को श्री गुरु तेग बहादर जी ने भाई मती दास जी, भाई सती दास जी और भाई दयाला जी के साथ आनंदपुर साहिब से दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

---

[37] संबत सतरां सौ बत्तीस सावन प्रविशटे अट्ठे के दिहुं गुरु जी का दरबार होआ, दीवान दरघा मल्ल सें बचन किया, तियारी करीये। हमें गोबिंद दास को गुरियआई देनी है, दीवान जी! तुसीं गुरियाई की समग्री लै आईये। सतिगुरां साहिबजादे को शस्तर बस्तर सजाय आपने आसन ते लिआइ बैठाया। दीवान दरघा मल्ल ने गुरिआई की समग्री लिआइ साहिबजादे के आगे राख के मट्ठा टेका। बाबे बुढ़े के श्री राम कुइर ने नंन्ही अवस्था में श्री गोबिंद दास जी के भाल में चंदन का टीका कीआ। बचन होआ, 'भाई सिखो! आगे से असां की थांइ श्री गोबिंद दास जी को गुरु जानना, जो जानैगा तिस की घाल थांइ पयेगी।' - गुरु कीयां साखीयां, पृष्ठ 79

भट्ट वही मुल्तानी सिंधी के अनुसार[38], श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 12, संवत् 1732 विक्रमी (12 जुलाई, 1675 ई.), अर्थात आनंदपुर साहिब से रवाना होने के अगले दिन, गुरु साहिब जी और उनके साथ तीन सिक्खों को रोपड़ के पास मल्लकपुर रंघड़ां नामक गाँव से मिर्ज़ा नूर मुहम्मद ख़ान द्वारा गिरफ्तार किया गया। इसके बाद उन्हें चार महीने बस्सी पठानां और आठ दिन दिल्ली में कैद रखा गया। गुरु कीयां साखीयां[39] और केसर सिंह छिब्बर रचित बंसावलीनामा दसां पातशाहियां का[40] में भी इस गिरफ्तारी का वर्णन मिलता है। इन्हीं के आधार पर कुछ इतिहासकार मानते हैं कि यह गिरफ्तारी श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत से पहले की गिरफ्तारी थी और इस कैद के बाद गुरु साहिब जी को बस्सी पठानां से दिल्ली ले जाकर शहीद किया गया परंतु यह विवरण सिक्ख परंपरा और सिक्ख स्रोत ग्रंथों से मेल नहीं खाते।

सिक्ख परंपरा के अनुसार, शहादत से पहले श्री गुरु तेग बहादर जी के, पंजाब और हरियाणा के अनेकों स्थानों पर चरण डालने के प्रमाण मिलते हैं। सिक्ख परंपरा में गुरु जी की शहादत से पहले आगरा से गिरफ्तारी संबंधी भी एक मजबूत परंपरा मौजूद है और उस स्थल पर गुरुद्वारा साहिब भी स्थापित है। भाई संतोख सिंह[41] और ज्ञानी ज्ञान सिंह[42] के अनुसार, गुरु

---

[38] गुरु तेग बहादुर जी महल नामा... को नूर मुहम्मद खां मिर्जा चऊकी रोपड़ वाले ने साल सतरां सौ बत्तीस, सावन परविशटे बारां के दिहु गाउं मल्लकपुर रंघड़ा परगना घनौला से पकड़ के सरहंद पुंचाया। गैलो दीवान मती दास, सती दास बेटा हीरा मल्ल छिब्बर के, गैल दियाल दास बेटा माय दास बलऊंड पकड़िया आया। गुरु जी चार मास बस्सी पठानां के बंदीखाने बंद रहे, आठ दिवस दिल्ली कोतवाली में बंद राखे। -भट्ट वही मुलतानी सिंधी, उद्धृत: *नानक प्रकाश पत्रिका*, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 86.

[39] गुरु कीयां साखीयां, पृष्ठ 80-81

[40] बंसावलीनामा दसां पातशाहीयां का, रत्न सिंह जग्गी, डॉ. (संपा.), पृष्ठ 116

[41] श्री गुर प्रताप ग्रंथ, जिलद ग्यारहवीं, राशि 12, अंशू 37, पृष्ठ 4369-4372

साहिब जी को शहादत से पहले आगरा से गिरफ्तार किया गया, जहाँ गुरु साहिब जी ने अपने आप को अनोखे ढंग[43] से प्रगट किया। इसलिए सिक्ख स्रोत ग्रंथों पर आधार पर प्रगट होने वाले आगरा की गिरफ्तारी वाले विचार को भी नकारा नहीं जा सकता और न ही भट्ट वही के तथ्यों को अनदेखा किया जा सकता है। इन दोनों विचारों के आधार पर यदि हम यह मान लें कि धमतान साहिब (8 नवंबर, 1665 ई.) की पहली गिरफ्तारी के अलावा गुरु साहिब जी की दो और गिरफ्तारियाँ हुईं, तो यह गलत नहीं होगा। बस इनके समय और घटनाक्रम को समझने की आवश्यकता है।

मल्लकपुर रंघड़ां की गिरफ्तारी को प्रिं. सतिबीर सिंह ने[44] मुग़ल हुकूमत द्वारा दी गई चेतावनी माना है, जिसके बाद गुरु साहिब जी को रिहा कर दिया गया। यह भी संभव है कि संचार साधनों की कमी के कारण भट्ट वही के लेखक को मल्लकपुर रंघड़ां वाली गिरफ्तारी के बाद गुरु जी की रिहाई का पता न लग सका हो। यही कारण सिक्ख स्रोत ग्रंथों में मल्लकपुर रंघड़ां वाली गिरफ्तारी का उल्लेख न होने का भी हो सकता है। ख़ैर, इस गिरफ्तारी से बाद गुरु साहिब जी की रिहाई मान लेने पर मल्लकपुर रंघड़ां या आगरा वाली उलझन लगभग समाप्त हो जाती है, क्योंकि गुरु साहिब जी के शहादत से पहले कुछ महीने नवाब सैफ़ ख़ान के पास रहने का समय

---

[42] तवारीख गुरु खालसा (डिजीटल प्रकाशन), प्रकाशक भाई बलजिंदर सिंह (राड़ा साहिब, पृष्ठ 59-60

[43] सिक्ख स्रोतों के अनुसार गुरु जी ने आगरा के एक बाग से हसन अली नामक मुस्लिम आज़ड़ी को मिठाई खरीदने के लिए एक कीमती दुशाला और कीमती अंगूठी दी। इसके द्वारा मुग़ल फौजों को बाग में अपनी उपस्थिति का अहसास करवा कर उन्होंने गिरफ्तारी दी।

[44] प्रिं. सतिबीर सिंह, इति जिनि करी, पृष्ठ 171-172

सिक्ख स्रोत[45] मानते हैं। मल्लकपुर रंघड़ां की यह गिरफ्तारी, गुरु साहिब जी की दूसरी गिरफ्तारी थी।

नवाब सैफ़ ख़ान से विदा होकर गुरु साहिब जी पटियाला, समाना, करहाली, चीका, करा, पेहोवा, रहेले, लाखन माजरा, रोहतक, कनौड़ आदि स्थानों से होते हुए आगरा पहुँचे[46], जहाँ उन्हें गिरफ्तारी के बाद दिल्ली ले जाया गया। आगरा वाली यह गिरफ्तारी गुरु साहिब जी की तीसरी गिरफ्तारी थी, जो शहादत से पहले हुई। गुरु साहिब जी के साथ भाई मती दास, भाई सती दास और भाई दयाला जी को भी गिरफ्तार किया गया जिनको बाद में शाही आदेश अनुसार इस्लाम धर्म कबूल ना करने के कारण, चांदनी चौक, दिल्ली में गुरु जी की आँखों के सामने शहीद कर दिया गया ताकि गुरु जी में भय उत्पन्न किया सके।

भाई मती दास जी के शरीर को मध्य से आरे के साथ चीर कर दो टुकड़े करके, भाई सती दास जी को रुई में लपेटने के बाद आग लगा कर और भाई दयाला जी को देग (एक बड़े बर्तन) के अंदर उबलते हुए पानी के बर्तन में बैठा कर शहीद किया गया।

हमारे कई इतिहासकार यह भी विचार प्रस्तुत करते हैं कि श्री गुरु तेग बहादर जी की गिरफ्तारी और शहादत के समय औरंगज़ेब दिल्ली में मौजूद नहीं था, बल्कि वह सैनिक विद्रोह दबाने के लिए हसन अब्दाल गया हुआ था। जादू नाथ सरकार (1947 ई.) से पहले यह बात निर्विवाद थी कि

---

[45] (क) बसे चुमासा सतिगुरु डेरा कीनि मुकाम। सैफ़दीन सेवा करहि नित प्रति आई सलाम॥ *(श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ,* जिल्द ग्यारहवीं, *राशि 12, अंशू 31, पृष्ठ 4347)*
(ख) तवारीख गुरु खालसा' के अनुसार गुरु साहिब जी 17 अश्विन, 1732 विक्रमी (1675 ई.) तक नवाब सैफ़ ख़ान के पास ठहरे।

[46] तवारीख गुरु खालसा (डिजिटल प्रकाशन), पृष्ठ 53-59.

शहादत के समय औरंगज़ेब दिल्ली में ही था क्योंकि सिक्ख स्रोत ग्रंथों में गुरु जी की शहादत से पहले औरंगज़ेब और गुरु साहिब जी के बीच हुई वार्ता का विस्तृत विवरण मिलता है। औरंगज़ेब के दिल्ली में न होने की बात तब प्रचलित हुई जब जादू नाथ सरकार ने 'मआसिरी आलमगीरी' नामक फारसी पुस्तक के अंग्रेज़ी अनुवाद में लिखा कि 14 फरवरी 1674 ई. को अफ़गानों के हाथों मुग़ल सेनापति सुजायत ख़ान के मारे जाने की खबर मिलने के बाद औरंगज़ेब 7 अप्रैल, 1674 ई. को हसन अब्दाल की ओर चला गया और 23 दिसंबर, 1675 ई. तक वहीं विद्रोह दबाने में लगा रहा।[47] सिरदार *कपूर सिंह* ने अपने लेख *'Who ordered the execution of Guru Tegh Bahadur'* [48] में दलीलपूर्वक सिद्ध किया है कि जादू नाथ सरकार ने हिजरी सन को ईस्वी सन में सही ढंग से परिवर्तित नहीं किया। सिरदार कपूर सिंह द्वारा *'Encyclopaedia of Islam (Published in London)'* के सन्दर्भ से प्रस्तुत यह तथ्य[49] अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है कि औरंगज़ेब की हसन अब्दाल से वापसी मार्च 1675 के अंत में हुई, न कि दिसंबर 1675 ई. में।

सबसे प्रमुख और निर्णायक तथ्य है- श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की 'बचित्र नाटक' में दी गई गवाही, जिसके अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपना शरीर रूपी बर्तन दिल्ली के बादशाह के सिर पर तोड़ा।[50] इस गवाही के बाद किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश नहीं रह जाती कि गुरु साहिब जी

---

[47] *MAÂSIR-I-ÂLAMGIRI,* Sir Jadunath Sarkar (Translater), P.81-82, 91.

[48] नानक प्रकाश पत्रिका, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 128-129.

[49] वही, पृष्ठ 129-130.

[50] ठीकर फोड़ दिलीस सिर प्रभु पुरि किया पयान।। - शब्दार्थ, दसम ग्रंथ साहिब, पोथी पहली, भाई रणधीर सिंह (संपा.), पृष्ठ 70.

की शहादत के समय औरंगज़ेब दिल्ली में ही था और उसी के आदेश से 'कीनो बड़ो कलू महि साका' वाली घटना घटित हुई।

औरंगज़ेब द्वारा गुरु जी को शहीद करने से पहले तीन विकल्प दिए गए- इस्लाम स्वीकार करो, कोई करामात (चमत्कार) दिखाओ या मौत की सज़ा के लिए तैयार हो जाओ। शाही क़ाज़ी ने इन में से एक विकल्प चुनने को कहा-

शरा मानि, कै अजमत दैन। किधों मृतु अपनी करि लैन।
इन तीनहुँ महिं लखहु जो नीकी। हिय के बीच करहु सु ठीकी।[51]

गुरु साहिब जी ने इस्लाम स्वीकार करने और करामात दिखाने के स्थान पर शहादत वाला तीसरा विकल्प चुना। औरंगज़ेब के आदेश और क़ाज़ी अब्दुल वहाब वोहरा के फ़तवे के अनुसार, समाना निवासी जल्लाद जलाल-उद-दीन द्वारा दिल्ली के चांदनी चौक में गुरु जी का शीश धड़ से अलग कर उनको शहीद किया गया। गुरु कीयां साखीयां[52] और भट्ट वही तलाऊंडा[53] के अनुसार, उनकी शहादत मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष 5, संवत् 1732 विक्रमी (11 नवम्बर, 1675 ई.) दिन गुरुवार को हुई। जिस बरगद के वृक्ष के नीचे गुरु जी की शहादत हुई, उस स्थान की पहचान मार्च 1783 ई. में सरदार बघेल सिंह करौड़सिंघिया ने दिल्ली जीतने के बाद एक वृद्ध मुस्लिम माशकी (पानी भरने वाली) महिला से करवाई, जिसके पिता ने शहादत के बाद उस स्थान को पानी से साफ़ किया था। उस स्थान पर बनी मस्जिद के साथ दीवार बनवा कर सरदार बघेल सिंह ने गुरुद्वारा सीस गंज

---

[51] श्री गुरु प्रताप ग्रंथ, जिल्द ग्यारहवीं, राशि 12, अंशू 64, पृष्ठ 4468

[52] *गुरु कीयां साखीयां*, पृष्ठ 82.

[53] *भट्ट वही तलाउंडा, परगना जींद* उद्धृत: *नानक प्रकाश पत्रिका*, जून–दिसंबर 1975, पृष्ठ 84

साहिब का निर्माण करवाया।[54]

शहादत के बाद भाई जैता जी (बाबा जीवन सिंह जी) गुरु जी का पावन शीश, सरकार की नज़रों से बचाकर दिल्ली से आनंदपुर साहिब की ओर ले गए। भट्ट वही मुल्तानी सिंधी के अनुसार[55] भाई जैता जी के साथ शीश लेकर जाने वालों में भाई नानू जी/ननुया जी और भाई ऊदा जी भी शामिल थे। बागपत, बड़ खालसा*, तरावड़ी, अंबाला और नाभा साहिब नामक स्थानों पर पड़ाव करते हुए भाई जैता जी और उनके गुरसिक्ख साथी मार्गशीष मास, शुक्ल पक्ष 10, संवत् 1732 विक्रमी (16 नवम्बर, 1675 ई.) को कीरतपुर साहिब पहुँचे। इस स्थान पर गुरुद्वारा बिबानगढ़ साहिब स्थित है। कीरतपुर साहिब से गुरु जी का पावन शीश सम्मानपूर्वक जुलूस के रूप में आनंदपुर साहिब लाकर, श्री गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा सम्मान के साथ संस्कार किया जहां गुरुद्वारा सीस गंज साहिब (आनंदपुर साहिब) स्थित है। भाई जैता जी की वीरता देखकर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने उन्हें 'रंघरेटे गुरु के बेटे' कह कर सम्मान प्रदान किया।

भाई लक्खी शाह वणजारा नामक गुरसिक्ख ने मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष 6, संवत् 1732 विक्रमी (12 नवम्बर, 1675 ई.) की रात अपने पुत्रों- नगाहीया, हेमा, हाड़ी और काहने के पुत्र धूमा की सहायता से गुरु जी के पावन धड़ को अपने घर लाकर संस्कार किया और सरकार को धोखा देने के

---

[54] Bhagat singh, *History of Sikh Misals,* Publication bureau, Punjabi University, Patiala, 2009, P. 279.

[55] 'भट्ट वही मुलतानी सिंधी, खाता अणियों का' उद्धृत नानक प्रकाश पत्रिका, जून-दिसंबर 1975, पृष्ठ 84.

* स्थानक परंपरा के अनुसार।

लिए अपने घर को आग लगा दी।[56] इस स्थान पर वर्तमान में गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब मौजूद है।

श्री गुरु तेग बहादर जी की इस अद्वितीय शहादत के गहरे और दूरगामी ऐतिहासिक प्रभाव पड़े। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के अनुसार[57], इस महान शहादत के बाद समस्त जगत में हाहाकार मच गई और आध्यात्मिक लोक में श्री गुरु तेग बहादर जी की जय-जयकार होने लगी। इस शहादत ने सोई हुई जनता को एक जबरदस्त झटका दिया, जिसके बाद कई स्थानों से औरंगज़ेब की मुग़ल हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गए। डॉ. इंदु भूषण बनर्जी लिखते हैं कि गुरु जी की शहादत के बाद पूरा पंजाब नफ़रत और प्रतिशोध की भावना से भड़क उठा।[58] रतन सिंह भंगू के अनुसार, उस दिन से दिल्ली की मुग़ल हुकूमत का प्रभाव घटना शुरू हो गया-

तब ते घटी पातशाही दिल्ली। तब ते तुरक कला भई ढिल्ली।[59]

गुरु जी की शहादत के बाद औरंगज़ेब बेचैन हो गया और वह उस रात चैन से सो न सका।[60] खालिसा नामा का लेखक बख़्त मल्ल लिखता है कि जब एक खुले ख्याल वाले दरवेश ने शहीद श्री गुरु तेग बहादर जी के

---

[56] गुरु कीयां साखीयां, पृष्ठ 85 और 'भट्ट वही जादोवंशियों की, खाता कनावत बड़तियों का' उद्धृत नानक प्रकाश पत्रिका, जून–दिसंबर 1975, पृष्ठ 84.

[57] तेग बहादुर के चलत भयो जगत को सोक॥ है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोकि ॥ -शब्दार्थ दसम ग्रंथ साहिब, पोथी पहिली, पृष्ठ 73.

[58] इन्दुभूषण बैनर्जी, *खालसे दी उत्पत्ति*, भाग द्वितीय, पृष्ठ 63, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2008.

[59] *श्री गुर पंथ प्रकाश*, डॉ. जीत सिंह शीतल (संपा.), पृष्ठ 69.

[60] राति प्रबिरती चिंत अधीना॥ रूचि करि खाना खान न कीना।
जबि प्रयंक पर पहुँचयौ पापी। हित सुपतनि के निंद्रा बयापी।
-श्री गुरु प्रताप ग्रंथ, जिल्द ग्यारहवीं, राशि 12, अंशू 68, पृष्ठ 4482

पावन शरीर को देखा तो पुकारकर कहा- 'सुल्तान ने अच्छा नहीं किया। इस कारणों से ही एक ऐसा बगावत का तूफान ऊठेगा जो सारी दिल्ली को अपनी लपेट में ले लेगा और दिल्ली ऊजाड़ कर रख देगा।' (फ़करि आज़ादाना राह गुज़र बर नाअश गुरु उफ़्ताद व गुफ़्त कि सुलतान खुब न करद ।)[61]

औरंगज़ेब का ख्याल था कि श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के बाद संपूर्ण सिक्ख कौम बेसहारा होकर निराशा में डूब जाएगी, लेकिन हुआ इसके बिल्कुल ही विपरीत। इस शहादत का सिक्खों ने अपने ढंग से ऐसा प्रतिकर्म किया जिसकी औरंगज़ेब को बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। 'मआसिरी आलमगीरी' में इस प्रकार की तीन घटनाएँ प्राप्त होती हैं। पहली घटना[62] 24 जून, 1676 ई./22 रबी-उल-अव्वल को चांदनी चौक में औरंगज़ेब के घोड़े पर सवार होने के दौरान घटित हुई जब उसके ऊपर एक डंडा फेंक कर मारा गया जो उसके अंगरक्षक की छतरी पर जाकर लगा। दूसरी घटना[63] 19 अक्तूबर, 1676 ई./21 शबान की है जब औरंगज़ेब नमाज़ पढ़कर वापस आ रहा था, तो भीड़ में से किसी ने उस पर तलवार से वार किया जिससे उसके अंगरक्षक मुक्करम ख़ान की उंगली घायल हो गई। तीसरी घटना[64] 27 अक्तूबर, 1676 ई./29 रमज़ान की है जब औरंगज़ेब जुमे की नमाज़ पढ़ने के बाद जामा मस्जिद की सीढ़ियाँ उतरकर नाव में सवार होने लगा, तो एक सिक्ख ने उस पर दो ईंटें फेंक कर मारी। यद्यपि वह

[61] खालसा नामा, पृष्ठ 12, खरडा पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला उद्धृत: इति जिनि करी, पृष्ठ 183

[62] *MAÂSIR-I-ÂLAMGIRI,* Sir Jadunath Sarkar (Translater), P.94-95

[63] *MAÂSIR-I-ÂLAMGIRI,* Sir Jadunath Sarkar (Translater), P.95

[64] वही, पृष्ठ 93

सिक्ख औरंगज़ेब के अंगरक्षकों द्वारा शहीद कर दिया गया, लेकिन साहस और विरोध की अभिव्यक्ति कर गया।

ये तीनों घटनाएँ दर्शाती हैं कि गुरु साहिब जी की शहादत के कारण सिक्खों में कितना प्रबल रोष व्याप्त था। प्रिं. सतिबीर सिंह ने[65] श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत की तुलना फ़ीनक्स नामक मिथक पक्षी से की है, जो अपने अंतिम समय में तिनके-फूस इकट्ठा करके, उसकी आग में स्वयं को भस्म कर देता है। इसके बाद आग की राख से एक अंडा निकलता है, जिससे फ़ीनक्स जैसा ही पक्षी जन्म लेता है। ठीक उसी प्रकार, श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत में से उनके जैसा ही मजलूमों रक्षक और निडर खालसा पैदा हुआ, जिसने इस 'ज़ुल्मी राज' को समाप्त करके 'हलीमी राज' की स्थापना की।

*****

[65] प्रिं. सतिबीर सिंह, इति जिनि करी, पृष्ठ 186

श्री गुरु तेग बहादर जी की पवित्र बाणी और संदेश

श्री गुरु तेग बहादर जी ने 15 रागों में 59 शब्द और 57 श्लोकों की रचना की, जिन्हें श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने साबो की तलवंडी (जिला बठिंडा) नामक स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में शामिल किया। गुरु साहिब जी की बाणी की भाषा मुख्य रूप से ब्रज और आंशिक रूप से सधुक्कड़ी है। गुरु जी द्वारा रचित जैजावंती राग के 4 शब्दों के माध्यम से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में एक नया राग-जैजावंती राग शामिल हुआ। उनकी बाणी में 38 दुपदे और 21 तिपदे सम्मिलित हैं। श्री गुरु तेग बहादर जी के 57 श्लोकों का श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के अखंड पाठ के भोग के समय पाठी सिंघों द्वारा वैरागमई और दिल को छु लेने वाली ध्वनि में पाठ किया जाता है जो 'सलोक वारां ते वधीक' में 'सलोक महला ९' शीर्षक के अंतर्गत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन अंग 1426 से 1429 तक दर्ज है। गुरु जी के सबसे अधिक शब्द सोरठि राग (12 शब्द) में हैं और सबसे कम शब्द आसा, बिहागड़ा और टोडी राग में हैं जिनकी गिनती तीनों रागों में 01-01 है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के राग क्रम अनुसार 15 रागों में दर्ज श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी का विवर्ण इस प्रकार है-

गउड़ी – 9 शब्द, आसा – 1 शब्द, देवगंधारी – 3 शब्द, बिहागड़ा – 1 शब्द, सोरठि – 12 शब्द, धनासरी – 4 शब्द, जैतसरी – 3 शब्द, टोडी – 1 शब्द, तिलंग – 3 शब्द (राग तिलंग काफी), बिलावल – 3 शब्द, रामकली – 3 शब्द, मारू – 3 शब्द, बसंत – 5 शब्द (01 शब्द बसंत हिंडोल + 04 शब्द राग बसंत), सारंग – 4 शब्द, जैजावंती – 4 शब्द

15 रागों में कुल – 59 शब्द

***सलोक वारां ते वधीक* में श्लोक ('सलोक महला ९' के शीर्षक अधीन)–57**

कुल बाणी – 59 शब्द और 57 श्लोक

श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी का मुख्य उद्देश्य, विषय-विकारों में भटक रहे मनुष्य को संसार और पारिवारिक संबंधों की नश्वरता वाले पक्ष से सुचेत करके, उसे अकाल पुरख (परमात्मा) के नाम से जोड़ना है क्योंकि अकाल पुरख का नाम ही सदैव कायम रहने वाला है।

गुरु जी ने अकाल पुरख को 'दीन बंधु', 'दुख भंजन', 'दीन दयाल', 'सुख दाता', 'पतित उधारन', 'सरब निवासी', 'चिंतामणि' आदि पदों से संबोधित किया है।

परमात्मा का स्वभाव पतितों (पापीयों) को पवित्र करने वाला है। वह अनाथों का नाथ है और भय से मुक्ति देने वाला है।[66] अकाल पुरख को श्री गुरु तेग बहादर जी ने सभी सुखों का एकमात्र दाता कहा है[67] जिसके सामने सारा संसार भिखारी के समान है।[68]

श्री गुरु तेग बहादर जी ने सांसारिक रिश्तों की वास्तविकता स्पष्ट करते हुए विचार प्रगट किया कि यह सारा संसार मनुष्य से केवल अपने सुखों के कारण ही जुड़ा रहता है। सुख के समय सारे ही रिश्तेदार-संबंधी मनुष्य से

---

[66] पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के ॥
कहु नानक तिह जानीअै सदा बसतु तुम साथि ॥६॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 1426

[67] सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोई ॥
कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होई ॥९॥ -वही, अंग 1426

[68] जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरण होवहि काम ॥४०॥ - वही, अंग 1426

निकटता और अपनापन बनाए रखते हैं परन्तु विपत्ति के समय इनमें से कोई भी पास नहीं आता। ऐसे कठिन समय में परमात्मा के अतिरिक्त कोई भी मनुष्य के काम नहीं आता।[69]

मनुष्य जीवन की आयु के पड़ाव अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी ने मनुष्य जीवन तीन अवस्थाओं में बाँटा है- बचपन, जवानी और बुढ़ापा। यदि परमात्मा का नाम-स्मरण न किया जाए तो ये सारी अवस्थाएँ व्यर्थ चली जाती हैं।[70]

श्री गुरु तेग बहादर जी ने माया में फँसे मनुष्य-मन को परमात्मा से जोड़ने के लिए बार-बार संसार की नाशवानता का पक्ष सामने रखा है। उन्होंने संसार की अल्पकालीन और अस्थायी प्रकृति को समझाने के लिए इसे बादल की छाया, रात्री के स्वप्न, पानी के बुलबुले, रेत की दीवार और मृगतृष्णा के रूप में प्रस्तुत किया है।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने इस अस्थिर संसार में तीन चीज़ों के अस्तित्व को सदैवकालीन स्थिर रहने वाला माना है– परमात्मा का नाम, नाम का जाप करने वाला साधु और नाम-जप की विधि बताने वाला गुरु।[71]

'नाम' श्री गुरु तेग बहादर जी की वाणी का आधारभूत विषय है। इस संबंध में पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि उनकी वाणी का मुख्य

---

[69] प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥
...अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥३॥१२॥१३९॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 634

[70] बल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु बिरधा सभ ही मानु ॥३५॥ -वही, अंग 1429

[71] नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंद ॥
कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥५६॥ -वही, अंग 1429

उद्देश्य मनुष्य को मोह-माया से मुक्त करके परमात्मा के नाम से जोड़ना है, जिसके माध्यम से ही मनुष्य जीवन की सफलता सम्भव है।

श्री गुरु तेग बहादर जी ने परमात्मा के नाम को, इसका स्मरण करने वाले शरणागत भक्तों तथा पापीयों का उद्धार करने वाला बताया है। इस संबंध में उन्होंने पौराणिक पात्र-गणिका, ध्रुव, गज (हाथी), अजामल्ल आदि का नाम-स्मरण द्वारा उद्धार होने के उदाहरण प्रस्तुत करके मनुष्य को नाम-स्मरण की प्रेरणा दी है।[72]

मनुष्य द्वारा नाम-स्मरण के बिना किए गए तीर्थ, व्रत, योग-साधना, यज्ञ आदि धर्म-कर्म किसी अर्थ नहीं रह जाते है।[73] अकाल पुरख के नाम के बिना ऐसे धार्मिक कर्म पानी में पड़े पत्थर के समान हैं, जिस पर पानी का कोई असर नहीं होता।[74]

श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में मुक्ति के संदर्भ में जीवन-मुक्ति का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। यह मुक्ति मनुष्य को सम-अवस्था का धारक बना देती है। गुरु साहिब जी ने सोरठि राग, धनासरी राग, गऊड़ी राग के शब्दों और अपने श्लोकों में जीवन-मुक्त वाली अवस्था का चित्रण किया है। इस उच्च अवस्था में मनुष्य सुख-दुःख, स्तुति-निंदा, मान-अपमान, खुशी-

---

[72] मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥
...नानक रहत चेत चिंतामनि तै भी ऊतरहि पारा ॥३॥४॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 632

[73] कहा भइओ तीरथ ब्रत किए राम सरनि नही आवै ॥
जोग जग निहफल तिह मानऊ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥१॥ -वही, अंग 831

[74] जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥
तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥२॥ -वही, अंग 831

ग़मी और विषय-विकारों से ऊपर उठकर सम-अवसथा का धारनी हो जाता है।[75]

जीवन-मुक्त की यह अवस्था, केवल गुरु की कृपा से ही प्राप्त होती है[76] और करोड़ों मनुष्यों में से कोई विरला ही इस अवस्था को प्राप्त करता है।[77]

सम्पूर्ण अध्ययन के बाद हम कह सकते हैं कि श्री गुरु तेग बहादर जी का जीवन और उनकी बाणी मानवता के लिए एक प्रेरणा स्रोत और आदर्श का कार्य कर रही हैं, जिससे प्रेरणा लेकर 'जगत जलंदे' को शांत किया जा सकता है। गुरु साहिब जी का जीवन कदम-कदम पर मानव का मार्गदर्शन करता है और उनकी बाणी, मनुष्य को सांसारिक पदार्थों के मोह से सावधान करते हुए सदा सर्वदा साथ रहने वाले परमात्मा के नाम से जोड़ती है। गुरु साहिब जी का सम्पूर्ण जीवन और उनकी बाणी मनुष्य को सांसारिक पदार्थों के मोह से ऊपर उठने और अन्याय-जुल्म के खिलाफ खड़े होने का संदेश प्रदान करके मनुष्य में 'भै काहू को देत नहि, नहि भै मानत आन' जैसे गुणों का संचार करती है।

*****

---

[75] जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
...कामु क्रोधु जिह परमै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥
-शब्दार्थ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग 633

[76] गुर किरपा जिह न्र कऊ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिऊ जिऊ पानी संगि पानी ॥३॥११॥ -वही,अंग 633

[77] कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥ -वही, अंग 1427.

श्री गुरू तेग बहादर जी की पवित्र वंशावली

जब औरंगज़ेब ने अत्याचार किए,
धर्म परिवर्तन के प्रहार किए।
कश्मीर से चलने तलवार लगी,
खून की बहने धार लगी।
जब कश्मीरी पंडितों ने पुकार करी,
तब गुरु तेग बहादर जी हुंकार भरी।
चौंक चाँदनी दिल्ली में, जो दे गए अमर कुर्बानी।
श्री गुरु तेग बहादर जी का, ना कोई जगत में सानी।

-गुरमीत सिंह दनौली

HARYANA SIKH GURDWARA MANAGEMENT COMMITTEE
ਹਰਿਆਣਾ ਸਿੱਖ ਗੁਰਦੁਆਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ